टैमीफ्लू कितनी कारगर है?

दुनिया भर की सरकारें टैमीफ्लू (ओसेल्टामिविर) नामक दवाई के भंडार जमा करके रख रही हैं ताकि फ्लू का हमला होने पर लोगों को बचाया जा सके। मगर वैज्ञानिकों के बीच इस बात पर काफी बहस चलती रही है कि क्या टैमीफ्लू सचमुच कारगर है। और अब एक ताज़ा अध्ययन से पता चला है कि टैमीफ्लू न तो बीमारी की अवधि को कम करती है और न ही अस्पताल में भर्ती होने की दर को।

टैमीफ्लू के निर्माता रोश (स्विट्ज़रलैण्ड) ने टैमीफ्लू के क्लीनिकल परीक्षण के आंकड़े गोपनीय रखे थे। दुनिया भर के कई समूह क्लीनिकल परीक्षण के आंकड़ों को लेकर ज़्यादा खुलेपन की वकालत करते रहे हैं। चिकित्सा समीक्षकों के समूह कोक्रेन और *ब्रिटिश मेडिकल जरनल* ने दावा किया कि टैमीफ्लू सम्बंधी जानकारी गोपनीय इसलिए रखी गई है क्योंकि रोश कंपनी दर्शाना चाहती है कि उनकी दवा बहुत फायदेमंद है जो सच नहीं है।

अंततः रोश ने एक-एक मरीज़ के बारे में कुछ जानकारी उपलब्ध कराई। एक अध्ययन में इस जानकारी का विश्लेषण किया गया था। इस अध्ययन का नेतृत्व मिशिगन विश्वविद्यालय के रोग-प्रसार वैज्ञानिक अरनॉल्ड मोंटो ने किया था। टीम ने कुल मिलाकर 9 क्लीनिकल परीक्षणों के आंकड़े देखे, जिनमें 4328 मरीज़ शामिल हुए थे। टीम ने बताया है कि जिन लोगों को टैमीफ्लू दी गई थी उनके फ्लू के लक्षण चार दिन में बेहतर हो गए जबकि प्लेसिबो से उपचारित लोगों में पांच दिन लगे (प्लेसिबो का मतलब होता है कि इन मरीज़ों को बिलकुल वैसी ही दिखने वाली गोली वगैरह दी जाती है मगर वह औषधि नहीं होती)। इसके अलावा आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि टैमीफ्लू का सेवन करने वाले मरीज़ों के अस्पताल में पहुंचने का खतरा 63 प्रतिशत तक कम हो जाता है। गौरतलब है कि *लैंसेट* शोध पत्रिका में प्रकाशित इस अध्ययन का कुछ फंडिंग रोश कंपनी से प्राप्त हुआ था।

दूसरी ओर, पिछले वर्ष कोक्रेन समूह और ब्रिटिश मेडिकल जरनल ने जो विश्लेषण किया था, उसके अनुसार टैमीफ्लू रोग के लक्षणों से राहत देने में मात्र 17 घंटे की कमी करती है और अस्पताल पहुंचने की दर में कोई अंतर नहीं होता। उनके मुताबिक टैमीफ्लू बहुत मददगार नहीं है।

बहरहाल, दोनों ही टीम ने फ्लू के मामलों में टैमीफ्लू के उपयोग की न तो सिफारिश की है और न विरोध किया है। और दोनों ही टीमों ने कहा है कि टैमीफ्लू के काफी साइड प्रभाव होते हैं, जिनमें मितली और उल्टी शामिल हैं। वैसे *लैंसेट* शोध पत्र का कहना है कि टैमीफ्लू लाभदायक तो है मगर यह कहना मुश्किल है कि क्या ये लाभ साइड प्रभाव से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

ब्रिटिश मेडिकल जरनल में प्रकाशित शोध पत्र के एक लेखक का मत है कि सरकारों ने टैमीफ्लू के भंडार जमा करने में जो पैसा खर्च किया है वह बरबाद ही हुआ माना जाना चाहिए। उनका कहना है कि उनके निष्कर्ष टैमीफ्लू के भंडारण और फ्लू के खिलाफ इसके उपयोग पर सवालिया निशान लगाते हैं। उनके मुताबिक *लैंसेट* में प्रकाशित अध्ययन निष्पक्ष नहीं है क्योंकि उसके लिए रोश कंपनी ने पैसा दिया था। ***(स्रोत फीचर्स)***